ध्यान-कक्ष

समभाव-समदृष्टि का स्कूल

Symbol of oneness

DHYAN-KAKSH

SCHOOL OF EQUANIMITY & EVEN-SIGHTEDNESS

विवेक जाग्रति

सतयुग की पहचान है यह, मानवता का स्वाभिमान है यह

SATYUG DARSHAN TRUST (REGD.)

मार्गदर्शक बल
(Guiding force)

सतवस्तु का कुदरती ग्रंथ

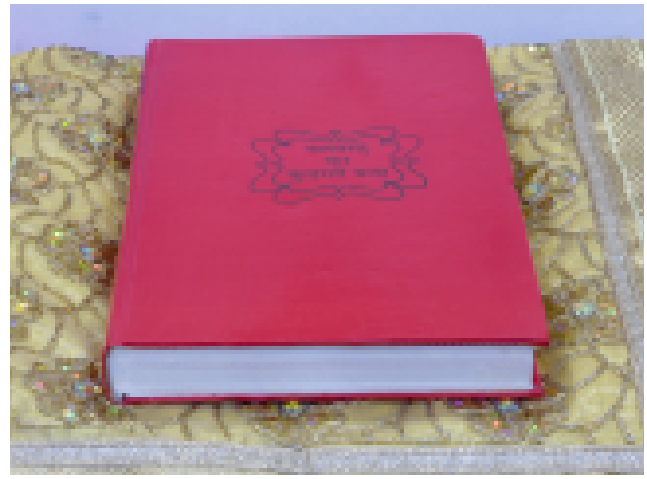

पढ़ो, समझो व अमल में लाकर
श्रेष्ठ मानव बन जाओ।

इसे पढ़ने के लिए इस QR Code को स्कैन करें।

प्रकाशक
सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
"वसुन्धरा" ग्राम भूपानी–लालपुर रोड फरीदाबाद–121002 (हरियाणा)
ई–मेलः info@satyugdarshantrust.org | website: www.satyugdarshantrust.org
© सर्वाधिकार सुरक्षित सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.) | ISBN : 978-93-85423-70-3

प्रथम संस्करण | जुलाई, 2024

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,

उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं, ज्ञान को अपनाओ और

निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह,

इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहो

ओ३म् अमर है आत्मा,

आत्मा में है परमात्मा

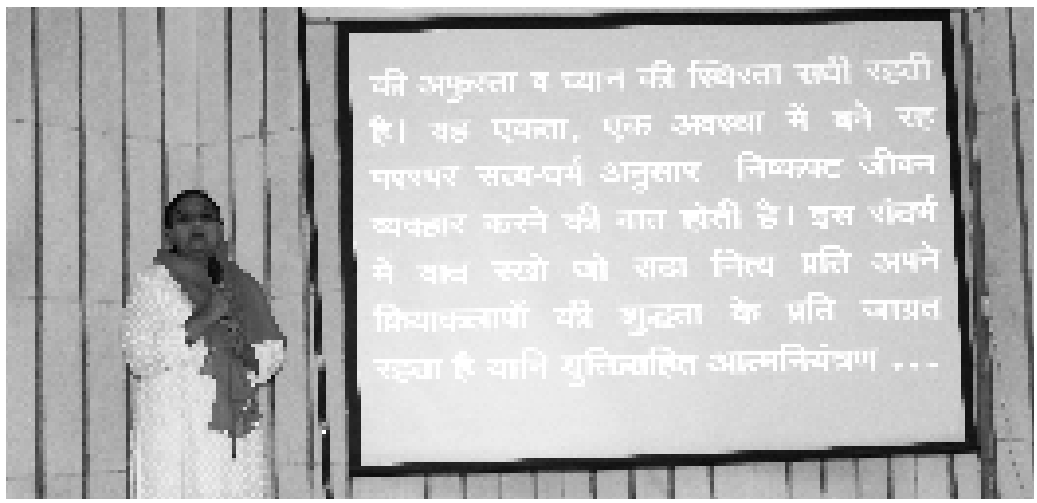

की अकुलता व ध्यान की स्थिरता बनी रहती
है। यह एकता, एक अवस्था में बने रह
परस्पर सत्य-धर्म अनुसार निष्कपट जीवन
व्यवहार करने की बात होती है। इस संदर्भ
में याद रखो कि सदा नित्य प्रति अपने
क्रियाकलापों की शुद्धता के प्रति जागृत
रहना है यानि सुनियोजित आत्मनियंत्रण ...

सच्चाई
धर्म
सम

विवेक जाग्रति - भाग 2

विवेक के संदर्भ में प्रकाशित पुस्तक के भाग-1 में हमने जाना कि विवेक सहज बुद्धि व निर्मल भावना का समन्वय है जो एक दिशा निर्देशक यंत्र की भांति जीवन के हर संघर्ष एवं दोराहे पर व्यक्ति को सही दिशा ज्ञान प्रदान कर, सन्मार्ग पर प्रशस्त करता है। यही नहीं यह क्षणिक लाभों व तत्कालीन परिणामों की उपेक्षा कर, दूरगामी परिणामों की ओर प्रवृत्त होता है तथा व्यवस्थित कार्य पद्धति प्रस्तुत करता है। इसलिए तो ईश्वर ऐसे अकलवान इंसान पर सदा प्रसन्न रहते हैं और कह उठते हैं:-

अक्लवान ते ईश्वर रैहंदे प्रसन्न,
अकल इन्सानां नूं करदी है दंग
अकल वेदों में है विदित,
अक्ल वेदों में है अस्थित
अक्ल है तुम्हारे पास,
अपने जन्म नूं न कर घात

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान, भाग-द्वितीय, कीर्तन न० 17)

आओ आज उसी श्रृंखला में आगे बढ़ते हुए जानें कि विवेक द्वारा हमारे अन्दर कैसे मानवता व आत्मीयता जैसे महान भावों का विकास होता है और हम अपनी कृति के अनुरूप अपनी सर्वोत्कृष्टता सिद्ध कर ईश्वर के कर्त्तव्यपरायण सुपुत्र कहला सकते हैं?

(विवेक और मानवता)

जैसा कि हम सब जानते हैं कि परमात्मा की शक्ति कुदरत द्वारा रचित यह जगत प्रकृतिस्थ गुणों यथा (सतोगुण, रजोगुण व तमोगुण) के कारण गुण-दोषमय है यानि जीवन के हर पक्ष में भले-बुरे तत्व समाहित हैं, जिनमें से एक का चुनाव करने हेतु मानव पूरी तरह से बौद्धिक तौर पर स्वतन्त्र है। यहाँ समझने की बात यह है कि इस चयन के विवेकाधारित होने पर ही मनुष्य के उत्थान-उत्कर्ष का कार्य सिद्ध होता है अन्यथा तो जीवन रुल जाता है। इस संदर्भ में सब स्वीकारेंगे कि एक विवेकी हंस ही इस गुण-दोषमय प्रकृति में रमण करते समय, सर्वत्र विद्यमान नित्य सार तत्व का

बोध कर, असार तत्व का त्याग करने में सक्षम हो पाता है और असत्-अधर्म का पतनोन्मुख अविचारयुक्त रास्ता छोड़, सत्य-धर्म के विचारयुक्त विजय पथ पर सहजता से प्रशस्त हो पाता है।

आशय यह है कि एक विवेकशील इंसान ही यह जान पाता है कि देह सहित स्थूल आँखों से दिखाई देने वाले इस नश्वर जगत अर्थात् सृष्टि के तमाम पदार्थों की अनेकता सत्य नहीं है क्योंकि उसकी हकीकत में कोई वास्तविक सत्ता नहीं है, केवल भ्रांति अथवा भ्रम मात्र है। वस्तुतः रूप, रंग, रेखा रहित ब्रह्म ही अप्रत्यक्ष व प्रत्यक्ष रूप से इस जगत का अभिन्न कारण व सार तत्व है और यही उसका वास्तविक ब्रह्म स्वरूप है तथा इसके अतिरिक्त और जो कुछ प्रतीत होता है, वह सब असत्य, असार और मिथ्या है।

इस तरह सत्-असत् के विवेक द्वारा वह - मनुष्यता के वाचक यथा संतोष, धैर्य, सच्चाई, धर्म, निष्कामता, परोपकारिता, क्षमा, त्याग, दम, शौच,

आत्मसंयम, सदाचार, न्याय, अहिंसा आदि सद्‌गुणों का वरण करता है और पशु वृत्ति यथा आहार, निद्रा, भय और मैथुन आदि करने की इच्छा से उबर यथार्थ रूप से मानव कहला पाता है। इससे स्पष्ट होता है कि मानवता का उदय तभी होता है जब क्षुद्र भोगवासना व अभिमान युक्त, स्वार्थपर आदि नकारात्मक एवं हिंसक भावों पर विवेक की विजय होती है यानि जहाँ मन की सारी क्रियाएँ तथा चेष्टाएँ विवेक के आधार पर सत्यतायुक्त होती हैं, वहीं मानवता का विकास होता है।

(विवेकशील बनने की आवश्यकता)

इस महत्ता के दृष्टिगत जीवन में विवेकशील बनने की आवश्यकता को समझो और जानो कि परमात्मा ने विवेकशक्ति आपको सार-असार, आत्मा-अनात्मा, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, वास्तविक-अवास्तविक, नित्य-अनित्य, जड़-चेतन, क्षणिक-स्थाई का भेद कर सम्यक् आत्मतत्व का अनुभव

OPEN HOUSE
DISCUSSION

करने हेतु दी है। जैसा कि शास्त्र भी कह रहा है:-

असत्य नूं भैणां छोड़ के,
सत्य नूं लवो धार
महाबीर जी दी शरणी आवो,
बेड़ा कर देसन पार

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, प्रथम सोपान,
कीर्तन न0 53)

अतः इस विवेक शक्ति के बलबूते पर अदृश्य ब्रह्म को, दृश्य जगत से अलग करके देखो यानि अनुभवजन्य जगत, शरीर व इन्द्रियों से विलग अपने यथार्थ आत्मिक स्वरूप के ज्ञान, गुण व क्षमता को परखो और चेतन अवस्था में आ, सच्चाई-धर्म के निष्काम रास्ते पर चलने वाले परोपकार प्रवृत्ति कर्त्तव्यपरायण इंसान बनो।

इस परिप्रेक्ष्य में मत भूलो कि यह मानव जीवन आपको यकायक नहीं मिला अपितु चौरासी लाख योनियों की त्रास भुगतने के पश्चात् यानि चेतना

की विकास क्रिया से गुज़रने के पश्चात् बड़ी मुश्किल से आत्मोद्धार व निष्कामता से सर्व का कल्याण करने के निमित्त प्राप्त हुआ है। अतः इस मिथ्या जगत के भोगों में लिप्त हो अपने अनमोल जीवन को नष्ट करने वाले आत्मघाती इंसान बनने के स्थान पर, ब्रह्म जो 'सत्-वस्तु' है उस परमतत्व का विचार कर, युक्तिसंगत आत्मज्ञान प्राप्त करो और सत्यतायुक्त आचरण करने वाले विवेकशील इंसान बनो क्योंकि सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है:-

सतवस्तु जिन्हां ने पहचान लई
सत् करे वर्ताओ आ आ आ।
सत् है ओन्हां दे घर दी रसम,
सत् है रसम रिवाज़ ओ ओ ओ।।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, चतुर्थ सोपान,
कीर्तन न0 55)

जानो ऐसा करना केवल इस मानव योनि में ही संभव है, अतः दुर्लभता से प्राप्त हुए इस सुनहरी

अवसर की उपेक्षा मत करो अपितु समर्पण, वैराग्य एवं विवेकशक्ति के बल पर अविद्या, जो समस्त दुःखों का मूल कारण है उस का प्रतिकार करो और आत्मिक विद्या के ग्रहण द्वारा संस्कारवान बन जन्म अपना आबाद करो।

विवेक जाग्रति

जान लो कि विवेक खूब गहनता से ध्यानपूर्वक आत्मतत्त्व का विचार-विश्लेषण यानि विवेचन करने से, जड़ और चेतन/आत्म और अनात्म को पृथक-पृथक कर उनका महीन अंतर समझ लेने से, यानि शरीर और शरीरी से आरम्भ करके, जगत और परम चैतन्य तत्व ब्रह्म का सत्य बोध कर लेने से, मन में जाग्रत होता है। इस संदर्भ में जानो जड़ वह है, जो अपने आप में चेतना व चेष्टा रहित है, जैसे शरीर, प्रकृति, माया तथा चेतन आत्मा है, जीव है, परमेश्वर है, ब्रह्म है।

प्रकृति द्वारा निर्मित यह शरीर जड़ है तथा परमात्मा का अंश होने के नाते आत्मा चेतन है।

अब जो इस जड़तत्त्व में आत्मतत्त्व का अध्यास/ मिथ्या प्रतीति करता है अथवा जड़ तत्व को भूल से चेतन मान या अंतःकरण, मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार और इन्द्रियों तथा शरीर में अहंभाव और उनके विषयों में मोहग्रस्त हो जाता है, वह अज्ञानी अविद्या के कारण दुःखों से ग्रस्त हो जाता है। जैसा कि कहा भी गया है:-

जन्म जन्मान्तरां दी हृदय विच मैल जो छाई,
अर्थ दी उत्थे नहीं समाई।
साडी मैल हटा दियो महाराज,
जल्दी रघुनाथ जी मिला दियो।।
दासियां नूं विभीषण वाला मन्त्र सिखाओ,
दासियां दे हृदय विच्चों अविद्या हटाओ।
सांवले चरण दिखाओ महाराज,
जल्दी रघुनाथ जी मिला दियो।।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, प्रथम सोपान,
कीर्तन न० 51)

इससे स्पष्ट होता है कि जड़ और चेतन का अविवेक ही मिथ्या ज्ञान का हेतु है तथा दुःखों का यानि तीनो

तापों से ग्रस्त हो, जन्म-मरण के चक्रव्यूह में फँसने का प्रमुख कारण है। इस घोर अनात्म दुःख से बचने का एक ही साधन है और वह है - स्वरूपास्थिति। अतः इस स्थिति को प्राप्त करने हेतु समभाव-समदृष्टि की युक्ति के अनुशीलन द्वारा, जड़ तत्त्व से अपने को सर्वथा भिन्न जानकर, अपने निर्विकारी, शुद्ध परमात्म स्वरूप में ख़्याल व ध्यान को लीन कर लो। आशय यह है कि संतोष, धैर्य के सवाल हल कर व समचित्तता से सच्चाई-धर्म की निष्काम राह पर चलते हुए, एक निगाह एक दृष्टि द्वारा, संकल्प पर पूरी तरह से फतह पा जाओ और 'ईश्वर है अपना आप प्रकाश, ईश्वर है अजपा जाप' इस विचार पर खड़े हो, एक दर्शन में स्थित हो जाओ। इस कार्य की सिद्धि हेतु ही सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया है:-

संकल्प नूं समझाओ सजनों,
संकल्प नूं समझाओ
अकल टिकाणे आ गई,
अकलमंद नाम कहाओ
फिर तुहाडी जित जित और फतह फ़तह

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान,
भाग-तृतीय, कीर्तन न0 8)

निश्चित रूप से इस के लिए कदम-कदम पर विचारपूर्वक अपने संकल्प को पकड़ कर, उसको प्रभु वल करने की आवश्यकता होगी। इस आवश्यकता की पूर्ति होने पर जहाँ संकल्प, वहीं दृष्टि हो जाएगी यानि ख़्याल-ध्यान महाराज जी के साथ अटूटता से जुड़ जाएगा और आत्मज्ञान प्राप्त होगा। आत्मज्ञान प्राप्त हो गया तो बुद्धि विवेकपरक हो जाएगी यानि जान जाएगी कि जो जड़ है - वह नाशवान है तथा सदा परिवर्तित होता रहता है और विनाश की ओर बढ़ता रहता है। इसके विपरीत जो चेतन है वह नित्य है और सदा अमरता को प्राप्त रहता है। अतः बुद्धिमत्ता इसी में है कि जड़ और चेतन का विचार कर, सतत् रूप से सर्वत्र विद्यमान परम चैतन्य, सत्य स्वरूप आत्मतत्व का ग्रहण कर, सर्वत्र उसी का एक दर्शन करो और इस तरह समस्त देह पर्यन्त कल्पित मिथ्या बंधनों से मुक्त हो, विवेकशील मानव बन जाओ।

Learn the science of inner dimensions

at **Dhyan-Kaksh**

School of Equanimity & Even-sightedness

विषय

ध्यान-कक्ष

- ध्यान-कक्ष यानि समभाव-समदृष्टि का स्कूल (परिचय)

आत्मज्ञान

- आत्मज्ञान
- आत्मज्ञानी की पहचान
- आत्मिक ज्ञान के लिए पहली आवश्यकता
- आत्मिक ज्ञान एवं भौतिक ज्ञान में अंतर
- आत्मिक ज्ञान प्राप्ति से लाभ

शरीर/प्राण/भाव/दृष्टि को सम रखना

- शीश अर्पण व शारीरिक समता साधने का महत्त्व
- प्राण को सम रखने की कला
- भाव
- समभाव
- समभाव साधना
- समदृष्टि
- समबुद्धि एंव समभाव-समदृष्टि का व्यावहारिक रूप

अपनी पहचान

- निज मानव स्वरूप की पहचान
- यथार्थ ब्रह्म स्वरूप की पहचान
- ब्रह्म
- शब्द ब्रह्म
- ओ३म शब्द की महानता व महत्ता

समभाव-समदृष्टि का कायदा

- जिह्वा स्वतन्त्र अर्थात् आहार एवं वाणी संयम
- संकल्प स्वच्छ
- दृष्टि कंचन

आत्मविजय

- आत्मनिरीक्षण
- आत्मसंयम/आत्मनियन्त्रण (भाग-1 और-2)
- आत्मानुशासन एवं आत्मविजय

विचार एवं विवेक

- विचार
- विवेक
- विवेक जाग्रति
- विवेकशील मानव की पहचान

Offline classes and activities

Every Sunday from 12.45 pm to 1.45 pm

at Dhyan-Kaksh, Satyug Darshan Vasundhara,
Bhopani-Lalpur Road, Greater Faridabad - 121002

Online classes can be viewed at

आप इस विषय का वीडियो निमलिखित लिंक
(QR code) पर स्कैन करके देख सकते हैं ।

View this class by scanning this QR code link

Initiatives of Satyug Darshan Trust (Regd.) on Humanity and Ethics

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD
www.humanityolympiad.org

HUMANITY DEVELOPMENT CLUB
www.awakehumanity.org

For FREE workshops in your School, College and groups

Scan for Dhyan-Kaksh Social Media

Contact

Mobile : +91 8595070695

Email: contact@dhyankaksh.org

Website: www.dhyankaksh.org

Scan for Dhyan Kaksh Location

https://bit.ly/3v4O8B2